समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

# महाकौशल–संदेश

वर्षः– 2019–20 पृष्ठः– 4 अंक :– 42 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

## युवा सन्यासी – स्वामी विवेकानन्द – डॉ. किशन कछवाहा

सन् 1893 में विश्व धर्म संसद को संबोधित करते हुये इस महापुरूष ने अपने ऐतिहासिक व्याख्यान में कहा था–''मुझे अपने धर्म पर गर्व है, जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकार्यता की शिक्षा दी। हम न केवल सार्वभौमिक सहिष्णुता में विश्वास रखते हैं, बल्कि सभी धर्मों को मूलरूप में स्वीकार करते हैं। मुझे अपने देश पर भी गर्व है, जिसने सभी धर्मों और सभी देशों के लोगों को शरण दी।''

वर्तमान परिस्थितियों और सामाजिक पर्यावरण को दर्पण दिखाते हुये मानो उस समय एक चेतावनी भी दी थी कि इस खूबसूरत धरती पर लम्बे समय से तमाम अलग ढ़ांचों में बंटा समाज, धर्मांधता और उसके खतरनाक प्रभावों से उसे बदसूरती में बदलता जा रहा है। यही कारण है कि हिंसक घटनायें बढ़ रही हैं, खून खराबे की परिस्थितियां निर्मित होती जा रही हैं। इससे इन्सानी सभ्यता को भारी क्षति पहुंच रही है। इससे कोई बच नहीं पा रहा है। यही कारण है कि जितना मानव समाज का विकास होना चाहिये था, नहीं हो सका है।

आज भारत युवाओं का भारत है। वह इतनी बड़ी आबादी को साथ लेकर विकास की ऊँचाईयाँ छूने प्रयत्नशील है। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा था कि ''व्यक्ति निर्माण ही उनके जीवन का लक्ष्य है। व्यक्ति और उसका चरित्र निर्माण के लिये ही उनके सारे प्रयास रहे हैं।''

वे एक महान राष्ट्र निर्माता थे। उन्होंने कभी भी जाति और नस्ल को महत्व नहीं दिया। वे मानवता के उत्थान के लिये ही प्रयासरत रहे। उन्होंने आध्यात्म की महत्ता पर भी बल दिया था। उनके ओजस्वी विचारों का ही परिणाम था कि वे लाखों–करोड़ों युवाओं के प्रेरणास्त्रोत बने। स्वतंत्रता आन्दोलन की मुख्य भूमिका का निर्वाह करने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जैसे प्रखर, उत्साही नेता आगे आये। स्वामी विवेकानन्द आधुनिक मानव के प्रतिनिधि हैं। भारतीय युवकों के लिये उनसे अच्छा, उनसे बेहतर दूसरा और कोई मार्गदर्शक नहीं हो सकता। स्वामी जी ने भारतीय युवकों का तब आव्हान किया था, जब भारत गुलामी की जंजीरों से जकड़ा हुआ था, लेकिन उनका दर्शन आज भी ठीक वैसा ही पूरी तरह प्रासंगिक सिद्ध हो रहा है। उनका तब किया गया सम्बोधन वर्तमान समय में भी और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। ''तुम लोगों में से प्रत्येक को महान, शक्तिशाली बनना होगा मैं चाहता हूँ, अवश्य बनना होगा। आज्ञा पालन, ध्येय के प्रति अनुराग और ध्येय को कार्यरूप में परिणत करने के लिये सदा प्रस्तुत रहना– इन तीनों के रहने पर कोई भी तुम्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकता। नीति–परायणता, शुद्ध अंतःकरण के साथ साहसी बनो– यही शब्द थे स्वामी जी के।''

वे केवल विचारक ही नहीं थे बल्कि एक कर्मयोगी थे। उनके अनुसार सामाजिक अथवा राजनीतिक सभी व्यवस्थाओं का आधार मनुष्यों की भलाई है। आडम्बर और अंधविश्वास का उन्होंने सदैव विरोध ही किया। भारत को वह सुजला–सुफला और पुण्य–भूमि ही मानते थे।

प्रख्यात कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक बार कहा था कि ''यदि आप भारत को समझना चाहते हैं, तो विवेकानन्द का अध्ययन कीजिये।''

11 सितम्बर 1893 को हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में 'शिकागो(अमरिका) में विश्व धर्म सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये उन्होंने कहा था–'अमरीका निवासी बहनों और भाईयो।' –इस सम्बोधन से सभागार देर तक तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान होता रहा। उनके वहां चार प्रमुख व्याख्यान हुये थे जिनमें हिन्दुत्व की संक्षिप्त, दार्शनिक व मनोवैज्ञानिक विवेचना प्रस्तुत कर श्रोताओं के हृदय को छूकर वे उस महासम्मेलन के आकर्षण के बिन्दु बन गये। ये अध्यात्मिक संदेश देने वाले व्याख्यान थे जिनकी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना हुयी। उनकी वक्तृता के प्रभाव के बारे में समकालीन समाचार पत्र 'दि प्रेस ऑफ अमेरिका' ने लिखा था–'' हिन्दू दर्शन व विज्ञान में निष्णात स्वामी विवेकानन्द ने अपने व्याख्यानों द्वारा उस विराट सभा को मुग्ध कर डाला था।'' ''न्यूयार्क हैरल्ड पत्र ने लिखा – शिकागो धर्म महासभा में विवेकानन्द ही सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हैं।''

वास्तव में राष्ट्र की जिस गौरवशाली पुनर्प्रतिष्ठा का सूत्रपात स्वामीजी द्वारा शिकागो की धर्मसभा में किया गया था, आज का हिन्दू जागरण उसी दिशा में बढ़ता हुआ कदम प्रतीत होता है। नियति की भी यही मंशा है कि यह जागरण स्वामी के सपनों का भारत निर्माण करने का आधार बन सकेगा। अतः हिन्दू जागरण के इस पावन कार्य को साम्प्रदायिक निरूपित करना हिन्दुत्व के महान विचार का अपमान करना ही माना जाना चाहिये।

उनका स्पष्ट मत था कि – 'जब कोई मनुष्य अपने पूर्वजों के बारे में लज्जित होने लगे तो समझिये कि उसका अंत आ गया। वे कहते थे कि ''मैं हिन्दू कहने में गर्व का अनुभव करता हूँ, क्योंकि हम उन महान ऋषियों के वंशज हैं जो संसार में अद्वितीय रहे हैं।'' हिन्दुत्व का अर्थ है–सभी धर्मों का सम्मान। हिन्दुत्व का अर्थ है–सभी उपासना पद्धतियों की इज्जत। हिन्दुत्व साम्प्रदायिकता का सर्वथा विरोधी है। हिन्दुत्व राष्ट्रवाद है। हिन्दुत्व मानवतावाद है। हिन्दुत्व सार्वभौमवाद है।'

स्वामी जी विश्व भर में अपनी साधुता, स्वदेश भक्ति, सम्पूर्ण मानव जाति के आध्यात्मिक उत्थान एवं प्राच्य तथा पाश्चात्य के मध्य मातृभाव के सार्वभौमिक उपदेशकर्ता के रूप में जाने जाते हैं। उनकी वाणी से विश्व को सत्य से भयभीत न होने वाले धर्म की ज्योति मिली है।

***जालियाँवाला बाग*** – जालियाँवाला बाग स्वतंत्रता संग्राम का ऐतिहासिक दर्दनाक दस्तावेज है। इस जघन्य हत्याकांड को अंजाम देने के लिये अंग्रेज सैनिकों द्वारा निहत्थे लोगों पर 1650 गोलियां चलाई थीं इसमें 337 स्त्री और पुरूष, 41 युवक और एक सात वर्ष का बच्चा भी मारा गया था, 1500 लोग घायल हुये थे। यह 13 अप्रैल 1919 का वैशाखी का दिन था। इस दर्दनाक दास्तान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

***नौसेना ने चीनी पोतों को अरब सागर से खदेड़ा*** – नई दिल्ली। भारतीय नौसेना प्रमुख ने मंगलवार को खुलासा किया कि सितम्बर में देश की समुद्री सीमा में घुस आए चीन के एक युद्धपोत को खदेड़ दिया गया था। चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का खोजी पोत 'शी यान 1' व अन्य सात पोत अंडमान निकोबार द्वीप समूह के पास भारत के आर्थिक क्षेत्र तक घुस आए थे।

नौसेना प्रमुख एडमिरल करमबीर सिंह ने दिल्ली में मीडिया से कहा कि चीन के पोतों को

**शेष भाग पृष्ठ क्र. 4 पर**

# वामपंथियों की नापाक फैक्ट्री : जेएनयू

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र सड़कों पर उतर कर प्रदर्शन कर रहे हैं क्योंकि विश्वविद्यालय ने उनसे शिक्षा और आवासीस सुविधा पर थोड़ा ज्यादा खर्च करने को कहा है। जेएनयू शायद विश्व का अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ छात्र होस्टल रूम का 20 रूपये महीना चुकाते हैं। पीएचडी की फीस 240 रूपये सालाना, एमए–एमएससी–बीसीए–बीए आदि पढ़ाई की वार्षिक फीस 216 रूपये है। छात्रों के आक्रामक आन्दोलन को देखते हुए सरकार ने बढ़ी हुई फीस का बड़ा हिस्सा वापस ले लिया है। पर छात्र शैक्षणिक फीस, होस्टल फीस तथा सेवा शुल्कों (बिजली, पानी इत्यादि सम्बंधी) को पुराने स्तर पर लाने पर अड़े हैं और अब परीक्षाओं का बहिष्कार करते हुए आन्दोलन जारी है।

इस आन्दोलन में हमेशा की तरह विश्वविद्यालय परिसर की दीवारों नारों से पटी पड़ी हैं। छात्रों तथा उनके समर्थक शिक्षकों ने दिल्ली की सड़कों को जाम करते हुए संसद तथा राष्ट्रपति भवन की ओर मार्च किया। इन ज्ञानार्थियों ने महिला एसोसिएट डीन प्रो. वंदना मिश्रा को कमरे में 29(उन्तीस) घन्टे बंद कर घेराव किया और उनके साथ अभद्रता की । स्वामी विवेकानन्द जी की मूर्ति को नुकसान पहुंचाते हुए उसके चबूतरे पर अभद्र नारे लिखे।

उल्लेखनीय है कि इस फीस–शुल्कों में दशकों से कोई बढ़ोत्तरी नहीं की गई है, हालांकि महंगाई के चलते खर्चे कई गुना बढ़ गए हैं। वे चाहते हैं कि फीस व शुल्क की रियायत गरीब छात्रों को ही नहीं, बल्कि सब छात्रों को मिले। इन छात्रों में 25प्रतिशत छात्र बिहार, उत्तरप्रदेश और पूर्वोत्तर के सम्पन्न घरों से हैं। कुछ छात्र यहां दस साल से भी ज्यादा समय से रह रहे हैं और पीएचडी (शोध) कर रहे हैं। जेएनयू भारत का अकेला विश्वविद्यालय है जहां 60प्रतिशत से अधिक छात्र स्कॉलरशिप और स्टाइपेंड पर एम. फिल और पीएचडी कर रहे हैं। यही नहीं यहां के छात्रों में बड़ी संख्या में ताकतवर राजनीतिक नेताओं अफसरों और शैक्षणिक जगत के बड़े लोगों के बच्चों की भी है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की रिपोर्टों के अनुसार जेएनयू प्रत्येक छात्र पर हर साल 2.50 लाख से ज्यादा खर्च करता है, जबकि दूसरे विश्वविद्यालय औसतन एक हजार रूपये खर्च करते हैं। सरकार का यह मानना उचित ही है कि शिक्षा के लिए अनुदान एक विश्वविद्यालय विशेष को ही देना उचित नहीं है, इस पर सभी विद्यार्थियों का समान अधिकार है।

मजेदार बात यह है कि छात्र और शिक्षक जेएनयू का ठप्पा लगाए रहते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि वे अपना ज्यादातर समय क्लासरूम के स्थान पर राजनीतिक गतिविधियों में बिताते हैं। इसका चरित्र अर्द्ध–राजनीतिक है। परिणामस्वरूप सीताराम येचुरी, प्रकाश करात, कन्हैया कुमार, शेहला रशीद, उमर खालिद जैसे विद्यार्थी यहां से बड़ी संख्या में पढ़कर निकले हैं।

स्थापना के बाद वामपंथी विचारधारा के मूनिस रजा इसके पहले अध्यक्ष और रेक्टर थे। प्रखर वामपंथी नुरूल हसन 1972 में शिक्षामंत्री बने और उन्होंने यहां कम्युनिस्टों को मजबूत किया।

इसका वामपंथी चरित्र इसलिए बचा हुआ है क्योंकि इसमें प्रवेश तथा शिक्षकों की नियुक्ति की प्रक्रिया इस तरह की है कि उसमें वामपंथी रूझान रखने वालों को प्राथमिकता मिलती है। नए शिक्षक जो उनकी विचारधारा से असहमत होते हैं उसका कैरियर जेएनयू–शैली के बहुमतवाद से चलने वाले वामपंथी आतंक की बलि चढ़ जाता है।

इन वामपंथी, नक्सलवाद समर्थक तथा राष्ट्रद्रोही विचारों वाले छात्रों का दोहरा चरित्र गत दिनों फिर दिखा जब सरकार ने अनुच्छेद 370 हटाया। इन छात्रों ने इसे कश्मीरियत पर हमला करार दिया, जबकि आतंकवादियों द्वारा किए गए जिहादी कत्लेआम को वे आजादी का आन्दोलन मानते हैं। पूर्व में भी यहां आतंकवादी अफजल गुरू के समर्थन में भारत विरोधी नारे खुलेआम लगे थे। जेएनयू देश के शैक्षणिक तालिबान के रूप में बचा हुआ है क्योंकि उससे सांठगांठ रखने वाले लोगा व्यवस्था के अन्दर घुसे हुए हैं और सरकारी पैसे पर पल बढ़ रहे हैं।

पचास वर्ष पुराना जेएनयू वामपंथी विचारधारा का किला, अलगाववाद का गढ़ है, जो दिमाग में मार्क्स तथा एजेंडे पर कश्मीर लेकर चलने वाली भीड़ का अंतिम आश्रय साबित हो रहा है। इसी कारण जेएनयू केन्द्र सरकार तथा प्रधानमंत्री का व्यक्तिगत विरोधी बन गया है।

अतः फीस बढ़ोत्तरी तो मात्र एक बहाना है। असल उद्देश्य केन्द्र सरकार का विरोध कर कांग्रेस तथा वामपंथियों की राजनीति चमकाना तथा इसी में अपना भविष्य खोजना लगता है। दुर्भाग्य से अधिकांश मीडिया भी उनके जाल में फंसा दिखता है।

# दैनिक जीवन में भगवद्गीता

श्रीमदभगवद्गीता जीवन की समस्याओं से पार निकलने और प्रमादग्रस्तजनों को जगाने का महामंत्र है। यह विषाद से प्रसार की ओर, कायरतासे शूरवीरता की ओर, निराशा से आशा की ओर, अस्थिरता से स्थिरता की ओर, संशय से निश्चिन्तता की ओर, सन्देह से विश्वास की ओर, पलायन से सक्रियता की ओर तथा दुर्बलता से दृढ़ता की ओर ले जाकर मनुष्य को मृत्यु के भय से मुक्त करके मोक्ष का मार्ग बताने वाली परब्रह्म परमात्मा की वाणी है। समयाभाव और जीवन की आपाधापी में आज लोग चाहते हुए भी नियम से गीता पढ़ नहीं पाते। ऐसे में यदि गीता के कुछ श्लोकों को पढ़कर और उनके भावों को हृदयंगम किया जाए तो अनेक उलझनों से छुटकारा मिल सकता है। यहां शान्त, सहज और सुखी जीवन के लिये गीता के कुछ अनुभूत प्रयोग दिये जा रहे हैं–

**त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।**
**कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।**

(गीता 16/21)

आत्मा को अधोगति में ले जाने वाले (सब अनर्थों के मूल) नरक के तीन द्वार हैं–काम, क्रोध और लोभ। अतः इन तीनों का त्याग करना चाहिए। कर्म मार्ग का विघ्नहर्ता काम है। काम से कर्म का नाश होता है। लोभ भक्ति व श्रद्धा का नाश करता है और क्रोध से ज्ञान का नाश होता है। विवेक से काम नष्ट होता है। संतोष से लोभ और वैराग्य से क्रोध नहीं होता है।

**प्रकृतेः क्रियामाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।**
**अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।।**

(गीता 3/27)

वास्तव में हमारे सब कर्म सब प्रकार से प्रकृति के गुणों द्वारा किये जाते हैं, परन्तु अहंकार से मूढ़ बना व्यक्ति मानता है कि 'मैं ही कर्ता हूँ।'

**तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित्।**
**अनिकेतः स्थिरमति–र्भक्तिमान्मे प्रियो नरः।।**

(गीता 12/15)

जो निन्दा और स्तुति को समान भाव से देखता है, मौन रहता है,(वस्तुतः ईश्वर स्वरूप का निरन्तर मनन करने वाला है), जो कुछ मिल जाए, उसी में संतुष्ट रहता है, किसी स्थान को अपना घर नहीं मानता (स्थान में ममता–आसक्ति से रहित है) और स्थिर चित्तवाला है, वह मेरा भक्त है, और ऐसा भक्त मुझे प्रिय है।

**श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।**
**ज्ञानं लब्धवा परां शान्तिचिरेणाधिगच्दति।।**

(गीता 4/39)

श्रद्धावान्, साधन परायण और जितेन्द्रिय मनुष्य ही ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होकर वह तत्काल आध्यात्मिक शान्ति को प्राप्त होता है।

प्रो. वी.के. अरोड़ा,
एम.ए.पीएचडी

# अधिकार से अधिक कर्तव्य

**श्री अर्जुनराम मेघवाल, केन्द्रीय संसदीय कार्य राज्यमंत्री**

**अधिकार और कर्तव्य** – भारतीय परम्पराओं में कर्तव्यों के प्रति हमेशा से विशेष बल दिया गया है। यदि हम सभी अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं तो हमें अपने अधिकारों की तलाश नहीं करनी पड़ेगी। हालांकि मूलरूप से संविधान में नागरिक के लिए मौलिक कर्तव्यों की व्याख्या को सम्मिलित नहीं किया गया था, संविधान सभा के कई अन्य सदस्यों ने जोर देकर कहा था कि नागरिकों को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों के लिए जागरूक होना चहिए। बाद में 42वें संविधान संशोधन द्वारा दस तथा 86वें संविधान संशोधन द्वारा एक मौलिक कर्तव्य को संविधान में सम्मिलित किया गया है।

**प्रकाश स्तम्भ की तरह है कर्तव्य** – आधुनिक विश्व की सभी प्रमुख समस्याओं का समाधान करने के लिए कर्तव्य शब्द एक प्रकाश स्तम्भ की तरह है। वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए सामूहिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह इसके लिए सकारात्मक कार्य करे। जीवनशैली में नैतिक, विधिक और नागरिक कर्तव्यों को अपनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से किए गए प्रयास इस चुनौतीपूर्ण परिदृश्य में आश्चर्यजनक रूप से सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

**नैतिक कर्तव्य** – यह व्यक्तिगत व्यवहार से संबंधित होता है। उदाहरण के लिए अपनी प्रगति एवं विकास के लिए अच्छी शिक्षा एवं बेहतर वातावरण पाना बच्चों का अधिकार है तो वृद्धावस्था में अपने माता–पिता की सेवा करना एवं उनका ख्याल रखना बच्चों का नैतिक कर्तव्य भी है। मिलावट, जमाखोरी, कालाबाजारी, कम गुणवत्ता के उत्पाद एवं भ्रष्टाचार के अन्य साधनों को प्रश्रय देने से दूर रहना एवं कार्य–कुशलता को बढ़ाना प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है। इन प्रवृत्तियों को बदलने के लिए प्रयास करना और उस दिशा में काम करना हमारा सर्वोच्च कर्तव्य है। मानव अधिकारों का प्रयोग करते समय नागरिकों का कर्तव्य है कि वे सार्वजनिक सम्पत्ति जैसे रेलवे, सड़क, ऐतिहासिक स्मारकों, सांस्कृतिक विरासतों, सरकारी भवनों आदि की रक्षा करें एवं उनको क्षति पहुंचाने वाली हिंसक गतिविधियों से दूर रहें।

**विधिक और नागरिक कर्तव्य** – ये कानून के रूप में उपस्थित हैं और नागरिकों द्वारा उनका पालन करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए अच्छी सड़कें, ढांचागत विकास, बेहतर परिवहन सुविधाएं प्राप्त करना यदि नागरिकों के अधिकार हैं तो ट्रेफिक नियमों का पालन करना उनका कर्तव्य भी है।

इसी प्रकार मूलभूत घरेलू सुविधाएं जैसे बिजली, स्वच्छ पानी प्राप्त करना नागरिकों के अधिकार हैं तो उनका यह भी कर्तव्य है कि वे बिजली एवं पानी की अनावश्यक बर्बादी न करें। यदि साफ–सुथरी गलियां प्राप्त करना हमारा अधिकार है तो हमारा यह कर्तव्य भी है कि हम कूड़े को इधर–उधर न फेकें, बल्कि उसे सही तरीके से नष्ट करें अथवा उचित कूड़ेदान में डालें। नागरिक बेहतर स्वास्थ्य और स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं पाने के हकदार हैं, लेकिन स्वच्छता, टीकाकरण को अपनाना, सफाई के लिए प्रयास करना और वैज्ञानिक तरीके से इसके प्रति जागरूक होना नागरिकों का प्रथम कर्तव्य है।

वास्तव में नागरिकों का यह अधिकार है कि उन्हें प्रदूषण मुक्त वातावरण और प्राकृतिक आपदा मुक्त माहौल मिले, लेकिन इसके लिए सरकारी प्रयासों के साथ–साथ स्वैच्छिक नागरिक सेवा, नदियों की सफाई, बेकार भूमि पर वृक्षारोपण, वन संपदा का संरक्षण, पर्वतों की सुरक्षा एवं जनसंख्या नियंत्रण के उपायों को अपनाने की भी आवश्यकता है। जनतांत्रिक भाव को सुदृढ़ बनाने के लिए मतदान करना उनका कर्तव्य भी है। इसके अतिरिक्त बेहतर जीवन के लिए सार्वजनिक सुविधाएं प्राप्त करना नागरिकों का अधिकार है तो राज्य की कल्याणकारी योजनाओं के लिए समय पर कर(टैक्स) भुगतान करना उनका कर्तव्य भी है। जब तक हम कर्तव्यनिष्ठता और उत्तरदायित्वपूर्ण संस्कृति को बढ़ावा नहीं देंगे, तब तक संविधान की प्रस्तावना एवं अनुच्छेद 51ए में निहित लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूर्णरूप से प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

राष्ट्र की परिकल्पना पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि यहां 125 करोड़ लोग हैं और यदि हर एक व्यक्ति एक कदम बढ़ाता है तो देश 125 करोड़ कदम आगे पहुंच सकता है। अतः इस संविधान दिवस के अवसर पर कर्तव्यपरायण जीवन शैली को अपनाने की ओर एक कदम चाहे वह घर हो, कार्यस्थल हो, सार्वजनिक स्थल हो या अंतरात्मा, भारत के संविधान निर्माताओं को विनम्र श्रद्धांजलि होगी। साथ ही नए भारत के निर्माण की दिशा में निर्णायक कदम होगा।

# क्या घग्गर-हकरा नदी ही बारहमासी सरस्वती नदी थी –नेचर पत्रिका

प्रतिष्ठित ब्रिटिश पत्रिका नेचर के ताजा अंक (20.11.2019) में भौतिकी अनुसंधान लेबोरेट्री, अहमदाबाद तथा आईआईटी मुम्बई ने नए वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर दावा किया है कि वर्तमान में भारत और पाकिस्तान में बहने वाली घग्गर हकरा नदी, वास्त में एक बारहमासी नदी थी। जिसके किनारे बड़ी संख्या में हड़प्पा की बस्तियाँ बसी थीं।

यह अध्ययन उस सिद्धांत का मजबूती से समर्थन करता है, जिसके अनुसार धग्गर–हकरा नदी ही पौराणिक सरस्वती नदी है, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में भी है। ऋग्वेद के अनुसार सरस्वती नदी ही एक बारहमासी नदी है।

वहीं, इसके विपरीत दूसरे सिद्धान्त में घग्गर–हकरा नदी को मौसमी नदी कहा गया है और बताया गया कि हड़प्पा सभ्यता के लोग बारिश के मौसम पर निर्भर रहते थे।

शोधकर्ताओं ने नदी के विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों में परिवर्तन को समझने के लिए नदी के 300 किलोमीटर लम्बे हिस्से में पुनर्निर्मित हुए तलछटों को देखा। इन प्रयासों के चलते शोधकर्ता 78,000 से 18,000 ईसा पूर्व और 7,000–2500 ईसा पूर्व के दो प्रमुख कालखंडों को स्थापित कर पाने में सफल हुए, जब नदी बारहमासी होकर बहा करती थी।

ऐसा माना गया है कि बाद के समय में सतलुज की सहायक नदियों से यह नदी पुनः बारहमासी बनी होगी। अपने नतीजे में शोधकर्ताओं ने नदी के पुनः बारहमासी बनाने के चरण को हड़प्पा सभ्यता के नष्ट होने की शुरूआत के समय से जोड़ा। इसके बाद ही लोगों ने घग्गर–सरस्वती घाटी को छोड़ दूसरी उपजाऊ जमीनों की तलाश करनी शुरू की होगी।

# 'इस भूमि पर जन्मा हर व्यक्ति पहले हिन्दू है'

बेंगलुरू में पली–बढ़ीं सिनू जोसफ की पैतृक जड़ें केरल में हैं। वह एक साथ शिक्षिका, लेखिका, सलाहकार का मिला–जुला रूप हैं। शैक्षिक रूप से इंजीनियर सिनू पिछले 6 वर्ष से सामाजिक जीवन के विविध पक्षों पर काम कर रही हैं। ग्रामीण भारत में व्यापक भ्रमण करते हुए उन्होंने 17,000 से अधिक युवतियों और महिलाओं से संवाद करके उनके रीति–रिवाजों और समस्याओं को जाना–समझा है। उनका विश्वास क्रियात्मक ज्ञानार्जन में है।

उन्होंने 2014 में महिलाओं के स्वास्थ्य के संबंध में काम करने वाला 'मैत्री स्पीक्स' नामक स्वैच्छिक संगठन बनाया था। जमीनी स्तर पर काम करते हुए यह संगठन समस्याओं का व्यावहारिक हल तलाशता है और साथ ही सामुदायिक स्तर पर ग्रामीण मुद्दों, विशेष रूप से पर्यावरण पर काम करता है। समर्पित लोगों की एक टीम के साथ काम करते हुए इस संगठन ने कर्नाटक, झारखंड, बिहार, असम, मेघालय,

**शेष भाग पृष्ठ क्र. 4 पर**

**पृष्ठ क्रमांक 2 का शेष भाग**

बिना अनुमति भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करने के कारण वापस लौटाया गया था। एडमिरल सिंह ने कहा, 'हमारे क्षेत्र में गतिविधि करने वाले किसी को भी, भारतीय नौसेना को इसकी जानकारी देना होगी।'

अधिकारियों ने कहा कि चीन की नौसेना के खोजी पोत को इलाके से वापस जाने पर मजबूर किया गया, क्योंकि पोत ने वहां जाने की अनुमति नहीं ली थी।

एडमिरल करमबीर सिंह ने भारतीय नौसेना के समुद्री सुरक्षा मिशन के बारे में बताया और कहा कि इस मिशन में 120 समुद्री लुटेरों को पकड़ा गया और समुद्री डकैती के 44 मामले सामने आए। नौसेना प्रमुख ने कहा कि हिन्द महासागर में चीन अपनी मौजूदगी लगातार बढ़ा रहा है। भारतीय नौसेना ऐसे हर कदम पर बारीकी से नजर रखे हुये है।

नौसेना प्रमुख ने कहा, 'चीन और पाकिस्तान का उत्तरी अरब सागर में नौसेना का संयुक्त सैन्य अभ्यास प्रस्तावित है। हम इस पर नजर बनाए हुए हैं। इस संयुक्त सैन्य अभ्यास के लिए उन्हें भारत के क्षेत्र में आने वाले हिन्द महासागर से ही होकर जाना होगा।' नौसेना प्रमुख ने कहा कि अलकायदा और दूसरे आतंकी संगठनों की समुद्री गतिविधि को देखते हुए हम सुरक्षा के उपाय अपना रहे हैं।

**पृष्ठ क्रमांक 3 का शेष भाग**

मणिपुर और तमिलनाडु में हजारो ग्रामीण किशोरियों और महिलाओं को जागरूकता कार्यशालाओं के माध्यम से राह दिखाई है। मासिक धर्म पर उनकी बनाई एनिमेशन फिल्म 'मैत्री' अब तक सरकारी स्कूलों में पढ़ रही 40 लाख से अधिक छात्राओं तक पहुंच चुकी है।

हाल ही में एक सेमिनार में रा.स्व.संघ और हिन्दुत्व के बारे में उनके विचार खूब सराहे गए। प्रस्तुत हैं समाज कार्य, रा.स्व. संघ और हिन्दुत्व आदि विषयों पर पाञ्चजन्य संवाददाता **प्रदीप कृष्णन** की **सिनू जोसफ** से हुई बातचीत के प्रमुख अंश–

**–आजकल आमतौर पर ऊँची शिक्षा पाने के बाद युवा मोटे वेतन वाली नौकरी चाहते हैं। लेकिन आज समाज सेवा में लगीं। इसके पीछे क्या प्रेरणा रही?**

मैं पैसे को प्राथमिक प्रेरणा बनाने वाले तर्क को कभी नहीं समझ सकी। इसीलिए मैं कभी आईटी की दुनिया में रम नहीं सकी। कभी–कभी लोगों को यह गलतफहमी होती है कि मैंने सामाजिक क्षेत्र में काम करने का फैसला करके कोई बलिदान किया है। ऐसी कोई बात नहीं है। मैं अपने काम का पूरी तरह से आनन्द लेती हूँ। सामाजिक क्षेत्र में आने से पहले मुझे वास्तव में नही पता था कि मुझे क्या करना चाहिए। लेकिन यह मालूम था कि मुझे क्या नहीं करना है। मैंने कुछ महीनों के लिए यूथ ऑफर सेवा में स्वैच्छिक योगदान देकर समझना चाहा कि यह है क्या। उसके बाद मुझे वहीं पूर्णकालिक पद की पेशकश की गई। फिर मैने पीछे मुड़कर नहीं देखा।। सामाजिक क्षेत्र में पिछले 10 वर्ष में मैंने अनुभव किया है कि पैसा कभी बाधा नहीं बनता। लेकिन अगर हम पैसे पर ध्यान देते हुए काम शुरू करेंगे तो खुद को भाग्यशाली मानती हूँ कि मैंने रा. स्व. संघ विचार परिवार के बीच काम किया है, जहां इस तरह की सोच को पूरी तरह से समझा और स्वीकार किया जाता है।

**–आपकी वर्तमान सामाजिक परियोजनाएं क्या हैं?**

–2009 से 2013 तक मैंने यूथ फॉर सेवा में डॉक्टर्स फॉर सेवा नामक एक प्रकल्प पर काम किया। उसके बाद, मैंने मासिक धर्म के विषय पर कुछ समय के लिए स्वतंत्र रूप से काम किया और बाद में मैत्री स्पीक्स ट्रस्ट बनाया। वर्तमान में मैं आदर्श ग्राम विकास पर काम कर रही हूँ, जो एक ग्रामीण विकास पहल है। हालांकि, मेरी रूचि का प्राथमिक क्षेत्र मासिक धर्म से जुड़ी सांस्कृतिक प्रथाओं के पीछे के विज्ञान की खोज और स्वदेशी विज्ञान के माध्यम से मासिक धर्म से जुड़े प्रतिबंधों को समझना है। इस साल के अंत तक मैं इस पर एक किताब प्रकाशित करूंगी।

**–भारत की संस्कृति और सभ्यता में आपकी रूचि कैसे जगी?** –वास्तव में मुझे हमारी संस्कृति के बारे में गहराई से जानने की ओर प्रेरित किया मासिक धर्म पर ग्रामीण किशोरियों से मेरी बातचीत ने। लड़कियां पूछती थीं कि 'मासिक धर्म के दौरान हमें मंदिरों में जाने की अनुमति क्यों नहीं होती?' मुझे यह स्वीकार कने में लगभग 5 साल लग गए कि अगर लाखों महिलाएं आज भी इसका अनुसरण कर रही हैं तो यह अंधविश्वास भर नहीं हो सकता। इसमें और भी बहुत कुछ होना चाहिए जो मुझे नहीं पता है। और इसलिए इस सबकी जड़ तक पहुंचने की एक अलग यात्रा शुरू हुई। मैंने आध्यात्मिक गुरूओं, आयुर्वेदज्ञों और देशभर के बहुत से बुद्धिमान पुरूषों और स्त्रियों से संवाद करते हुए ज्ञान अर्जित किया। लेकिन ज्यादातर बातें मैंने ग्रामीण दादियों–नानियों से जानीं।

**–आप खुद को हिन्दू मानती हैं? क्या?** – बेशक, हिन्दू मानती हूँ। इस देश में जन्म लेने वाला हर व्यक्ति पहले हिन्दू है। हम यह चाहें या न चाहें, यह अपरिवर्तनीय तथ्य है। सबसे पहले यह संस्कृति है, जीवन शैली है, जो प्रकृतिवश इस भूमि पर जन्म सभी लोगों को समाहित करती है। मुझे यह बात समझने में भले समय लगा हो, लेकिन अब इसे समझ लेने के बाद इस पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता।

**–आपने कैथोलिक चर्च या ईसाई मत को क्यों छोड़ा?** – स्कूली जीवन के दौरान ईसाई होना मुझे बहुत दमघोंटू लगता था। पहली वजह यह थी कि इसमें गैर––ईसाईयों को अपने से नीचा मानना होता है और दूसरी वजह, ईसाई मत का प्रमुख पक्ष अपराध–बोध।

स्कूल में ईसाई अध्यापिकाएं चुपचाप दूसरे पंथों के बारे में अपमानजनक बातें बुनती थीं। बताती थीं कि ईसाइयत ही असली पंथ है, हिन्दुत्व का आधार सिर्फ मिथक है, जिनका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। मैंने ऐसे तौर–तरीकों के कारण आस्थावान ईसाईयों के मन–मस्तिष्क पर पड़ने वाले भयावह परिणामों को नजदीक से देखा है। ऐसी स्थिति में उनकी आस्था कट्टरवाद की सीमा पर पहुंच जाती है। उन्माद में वे मानसिक संतुलन खो देते हैं।

मैं जब 15–16 साल की थी तो इन मुद्दों पर विद्रोह करना और सवाल उठाना शुरू किया। तब से आज तक जब भी कोई मुझसे ईसाई होने के बारे में कोई बात करता है मैं उसे कहती हूँ कि मैं नास्तिक हूँ। इसके अलावा, यदि कोई यही प्रश्न मुझसे हिन्दू होने के बारे में पूछता है तो मेरा उत्तर काफी अलग होता है। हिन्दू होने के संदर्भ में मैं निश्चित ही नास्तिक नहीं हूँ क्योंकि हिन्दुत्व किसी को किसी ऐसी बात का विश्वास करने के लिए बाध्य नहीं करता जो उसके प्रत्यक्ष अनुभव से परे हो।

**सूचना**

कृपया आप अपना सुझाव महाकोशल संदेश के ई–मेल व्हाट्सअप नं. 9713223539 पर भेजें।

**– सम्पादक**

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश। संपादक– डॉ. किशन कछवाहा-
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com